श्रीदुर्गा-साधना

पुष्प १

भूतानि दुर्गा भुवनानि दुर्गा, स्त्रियो नरश्चापि पशुश्च दुर्गा।
यद् यद्धि दृश्यं खलु सैव दुर्गा, दुर्गा स्वरूपादपरं न किंचित् ।।

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

'वासन्तिक नवरात्र' की **पर्व-पत्र** हार्दिक शुभकामनाएँ

वासन्तिक नवरात्र, 'क्रोधी'-सं० २०६८ वि० :: ०४ अप्रैल, २०११

- **चैत्र शुक्ला प्रतिपदा**, सोमवार (०४ अप्रैल, ११) : **वासन्तिक नवरात्र प्रारम्भ**। प्रातः-काल सतैल स्नान। ध्वजारोहण। **'ऐन्द्र'-योग प्रातः ९:३९ बजे तक एवं उसके बाद 'वैधृति' होने के कारण 'कलश'-स्थापना प्रातः-काल ९:३९ के पहले करनी चाहिए** अथवा **अभिजित् मुहूर्त (११:३५ से १२:२५) में करनी चाहिए**। **'चण्डी'-पाठ** प्रारम्भ। सप्त-दिवसीय पाठ-कर्त्ता **'सप्तशती'** के **अध्याय १ का पाठ** करें।
- **चैत्र शुक्ला द्वितीया**, मंगलवार (०५ अप्रैल, ११) : **'चण्डी'-पाठ**। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय २-३ का पाठ** करें।
- **चैत्र शुक्ला तृतीया**, बुधवार (०६ अप्रैल, ११) : **'चण्डी'-पाठ**। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ४ का पाठ** करें। **सौभाग्य-सुन्दरी-व्रत**।
- **चैत्र शुक्ला चतुर्थी**, गुरुवार (०७ अप्रैल, ११) : **'चण्डी'-पाठ**। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ५-६-७-८ का पाठ** करें। **श्री विनायक गणेश-चतुर्थी**।
- **चैत्र शुक्ला पञ्चमी**, शुक्रवार (०८ अप्रैल, ११) : **'चण्डी'-पाठ**। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ९-१०**। श्री लक्ष्मी-पूजा।
- **चैत्र शुक्ला षष्ठी**, शनिवार (०९ अप्रैल, ११) : **'चण्डी'-पाठ**। सप्त-दिवसीय पाठ में **अध्याय ११ का पाठ** करें। श्री सूर्य-षष्ठी-व्रत।
- **चैत्र शुक्ला सप्तमी**, रविवार (१० अप्रैल, ११) : **'चण्डी'-पाठ**। सप्त- दिवसीय पाठ में **अध्याय १२-१३ का पाठ** करें। **महा-निशा-पूजन (सप्तमी-विद्धा अष्टमी)**।
- **चैत्र शुक्ला अष्टमी**, सोमवार (११ अप्रैल, ११) : **'चण्डी'-पाठ। महा-अष्टमी-व्रत। अष्टमी** रात्रि ११:३० तक।
- **चैत्र शुक्ला नवमी**, मंगलवार (१२ अप्रैल, ११) : **महा-नवमी-व्रत**। हवन। **नवमी** रात्रि ०९:५९ तक। श्री राम-नवमी। श्रीतारा-जयन्ती।
- **चैत्र शुक्ला दशमी**, बुधवार (१३ अप्रैल, ११) : **प्रातः नवरात्र-व्रत-पारण**।
- **चैत्र शुक्ला एकादशी**, गुरुवार (१४ अप्रैल, ११) : **कामदा एकादशी-व्रत। श्री लक्ष्मी-नारायण-पूजा**।
- **चैत्र शुक्ला चतुर्दशी-पूर्णिमा**, रविवार (१७ अप्रैल, ११) : **व्रत की पूर्णिमा**।
- **चैत्र शुक्ला पूर्णिमा**, सोमवार (१८ अप्रैल, ११) : **स्नान-दान की पूर्णिमा**।

विशेष

इस वर्ष **वासन्तिक नवरात्र, चैत्र शुक्ला प्रतिपदा** (०४ अप्रैल, ११) को पहले **'ऐन्द्र'-योग** प्रातः ९:३९ तक है, उसके बाद **'वैधृति'-योग** है। अतः **'कलश'-स्थापना प्रातः** अथवा **अभिजित् मुहूर्त** में करना चाहिए।

अपनी **कुल-परम्परा** एवं **सङ्कल्प** के अनुसार **'अष्टमी'** अथवा **'नवमी'**-तिथि को **'हवन'** कर **'कन्या'-पूजन** करना चाहिए। **'नवमी'**-तिथि **१२ अप्रैल, ११ को रात्रि ०९:५९ तक** है। अतः **'पारण'** दशमी में **प्रातः-काल** करना चाहिए।

सूचना : **'चण्डी' पुस्तक-माला** वर्ष ७०, पुस्तक १ (**श्री दुर्गा-साधना, पुष्प-२**), पुस्तक-२ (**श्री कमला-कल्पतरु, पुष्प-३**), पुस्तक ४ (**श्री श्री विद्या-साधना, पुष्प-६**), पुस्तक ५ (**कुल-साधना, पुष्प-३**) अप्रैल-मई, २०११ में भेजी जाएँगी।

'कौल-कल्पतरु' चण्डी की विशेष प्रस्तुति

वर्ष-६९

श्री दुर्गा-साधना

पुष्प-१

श्री दुर्गा-स्तव-मञ्जरी

आदि-सम्पादक

प्रातः-स्मरणीय 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

★

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

Website : www.paravani.org Email : chandi_dham@rediffmail.com

अनुदान १५/-

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

श्री जगद्धात्री दुर्गा

ॐ
जगद्धात्रि!
जगन्मातः!
जगदानन्द-दायिनि!
महिषासुर-संहन्त्रि!
प्रणमामि निरन्तरम्।

सिंह-स्कन्ध-समारूढ़ां,
नानालङ्कार-भूषिताम्
चतुर्भुजां महा-देवीं,
नाग-यज्ञोपवीतिनीम् ।।
शङ्ख-शार्ङ्ग-समायुक्त,
वाम-पाणि-द्वयान्विताः।
चक्रं च पञ्च-वाणांश्च,
धारयन्तीं च दक्षिणे।।
रक्त-वस्त्र-परीधानां,
बालार्क-सदृशीं तनुं।
नारदाद्यैर्मुनि-गणैः,
सेवितां भव-सुन्दरीम्।।
त्रिवली-वलयोपेत-
नाभि-नाल-मृणालिनीम्।
रत्न-दीप-मय-द्वीपे,
सिंहासन-समन्विते।।
प्रफुल्ल-कमलारूढ़ां,
ध्यायेत् तां भव-गेहिनीम्।।

तृतीय संस्करण
फाल्गुन शुक्लाष्टमी, शोभन सं० २०६७ वि०-१३ मार्च, २०११
सर्वाधिकार सुरक्षित
परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

अनुक्रमणिका

भूतानि दुर्गा, भुवनानि दुर्गा;
स्त्रियो नरश्चापि, पशुश्च दुर्गा।
यद् यद्धि दृश्यं, खलु सैव दुर्गा;
दुर्गा स्वरूपादपरं, न किंचित्।।

	श्री दुर्गा-स्तुति ...	४
	प्राक्कथन ...	५
(१)	**श्रीदुर्गा-कवचेश्वरम्** ...	११
	(श्रीदेवी-रहस्य : श्रीभैरव उवाच)	
(२)	**श्रीब्रह्माण्ड-मोहन दुर्गा-कवचम्** ...	१७
	(श्रीनारद उवाच)	
(३)	**श्रीदुर्गा-पञ्जर-स्तोत्रम्** ...	२०
	(श्रीरुद्र-यामल : श्रीमार्कण्डेय उवाच)	
(४)	**श्रीदुर्गा-कवचम्** ...	२१
	(श्रीकुब्जिका-तन्त्र : श्रीशङ्कर उवाच)	
(५)	**श्रीब्रह्माण्ड-विजय दुर्गा-कवचम्** ...	२३
	(ब्रह्म-वैवर्त्त पुराण : श्रीनारद उवाच)	
(६)	**श्रीदुर्गा-अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्** ...	२७
	(विश्वसार-तन्त्र : श्रीईश्वर उवाच)	
(७)	**श्रीदुर्गा-स्तोत्रम्** ...	२९
	(ब्रह्म-वैवर्त्त पुराण : श्रीनारद उवाच)	

***

श्रीदुर्गा-स्तुति

सर्व-लोक-रचयिता भगवती दुर्गा की स्तुति–

ॐ दुर्गां शिवां शान्ति-करीं, ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियां।
सर्व-लोक-प्रणेत्रीं च, प्रणमामि सदा शिवाम्।।

विश्व की स्वामिनी भगवती दुर्गा की स्तुति–

ॐ मङ्गलां शोभनां शुद्धां, निष्कलां परमां कलां।
विश्वेश्वरीं विश्व-मातां, चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।

सर्व-देव-मयी भगवती दुर्गा की स्तुति–

ॐ सर्व - देव - मयीं देवीं, सर्व - रोग - भयापहां।
ब्रह्मेश - विष्णु - नमितां, प्रणमामि सदा उमाम्।।

दिव्य-स्थान-निवासिनी भगवती दुर्गा की स्तुति–

ॐ विन्ध्यस्थां विन्ध्य-निलयां, दिव्य-स्थान-निवासिनीं।
योगिनीं योग-मातां च, चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।

संसार-रूपी समुद्र से तारनेवाली भगवती दुर्गा की स्तुति–

ॐ ईशान - मातरं देवीमीश्वरीमीश्वर - प्रियां।
प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां, संसारार्णव - तारिणीम्।।

।।फल-श्रुति।।

ॐ य इदं पठति स्तोत्रं, शृणुयाद् वापि यो नरः।
स मुक्तः सर्व - पापस्तु, मोदते दुर्गया सह।।

***

ॐ कायेन मनसा वाचा, कर्मणा यत् कृतं मया।
ज्ञानाज्ञान - कृतं पापं, दुर्गे! त्वं हर दुर्गतिम्।।

प्राक्कथन

(द्वितीय संस्करण में प्रकाशित)

'मूल-प्रकृति'-रूपा श्रीदुर्गा की महिमा

'श्री देवी-भागवत', स्कन्ध ३ और अध्याय ९ में श्रीदुर्गा का उल्लेख आया है। स्कन्ध ३, अ० २३ में राजा सुदर्शन के प्रसङ्ग में श्रीदुर्गा की महिमा एक कथा-रूप में वर्णित है। यथा—

अयोध्या-पुरी के सूर्य-वंशी राजा पुष्प के पुत्र ध्रुव-सन्धि की दो रानियाँ—मनोरमा और लीलावती थीं। मनोरमा के पुत्र सुदर्शन और लीलावती के शत्रुजित थे। आखेट के समय ध्रुव-सन्धि सिंह द्वारा मारे गए। शत्रुजित के नाना, उज्जयनी के राजा युधाजीत ने बल-पूर्वक छोटे राजकुमार शत्रुजित को राज-गद्दी पर बैठा दिया क्योंकि वे उनके नाती थे। उन्होंने सुदर्शन को मार डालने का भी प्रयत्न किया, जिससे शत्रुजित निष्कण्टक राज्य कर सकें। विदूल नामक मन्त्री की सहायता से मनोरमा पुत्र सुदर्शन को ले काशीपुरी के निकट भरद्वाज आश्रम को भाग गईं और वहीं मुनि के आश्रम में रहने लगीं।

एक दिन राजकुमार सुदर्शन मुनि-कुमारों के साथ खेल रहे थे कि एक मुनि-कुमार ने विनोद में विदूल मन्त्री को—'क्लीव' कहा। भाग्य-वशात् सुदर्शन ने उस शब्द को सुन लिया, किन्तु वकार छोड़कर वे केवल 'क्ली-क्ली' कहने तथा जपने लगे। यद्यपि अनुस्वार-युक्त 'क्लीम्' ही देवी का बीज-मन्त्र है, तथापि अनुस्वार-विहीन 'क्ली' के ही जपने से सिद्धता को प्राप्त करने लगे। भगवती की दया से 'क्लीम्' मन्त्र का पूर्ण जप उनसे होने लगा और उसी के प्रभाव से वे अल्प-काल में ही सभी विद्याओं में निपुण हो गए। शृङ्गवेरपुर के निषाद-राज ने उन्हें ४ घोड़े का एक रथ भेंट में दिया।

काशि-राज की कन्या शशिकला को भगवती ने स्वप्न में वर दिया कि 'सुदर्शन तुम्हारे पति होंगे।' तदनुसार उसने अपने हृदय में सुदर्शन को ही अपना पति वरण कर लिया, किन्तु पिता काशि-राज ने एक बहुत बड़े स्वयम्वर का आयोजन किया, जिसमें विभिन्न देश के नरेश आए। अपने नाती शत्रुजित के साथ राजा युधाजीत भी आए। सुदर्शन भी अपनी माँ और मन्त्री विदूल के साथ अपने रथ पर वहाँ जा पहुँचे। आए हुए राजाओं को मालूम हो गया कि शशिकला सुदर्शन को ही वरेगी। कई ने बल-पूर्वक उसका हरण करने का निश्चय किया। सुदर्शन से जब लोगों ने यह बात बताई और यह भी कहा कि युधाजीत ने उन्हें मार देने की ठानी है, तो उसने भगवती पर भरोसा कर कहा कि, "मनुष्य की कुछ भी शक्ति नहीं। जब तक

महा-माया द्वारा प्रेरित काल न आवे, तब तक कोई किसी को नहीं मार सकता। यदि युधाजीत बिना शत्रुता के मेरा अनिष्ट करना चाहेगा, तो भगवती उसे अच्छा फल नहीं देंगी।" सुदर्शन की ही बात सत्य सिद्ध हुई।

काशि-राज ने शशिकला का विवाह सुदर्शन से कर दिया। अन्य राजा तो सोच-समझ कर हट गए, किन्तु युधाजीत ने सुदर्शन को मारने के विचार से घोर युद्ध ठाना। सुदर्शन तनिक भी नहीं घबराए और 'क्लीं' बीज-मन्त्र को जपते रहे। भगवती से भक्त की आपत्ति नहीं सही गई। तत्क्षण सिंहारूढ़ हो प्रगट हो गईं। सुदर्शन ने अपने श्वसुर को भगवती के दर्शन कराए, किन्तु शठ युधाजीत और शत्रुजित-देवी तथा सुदर्शन के ऊपर बाण-वृष्टि करने लगे। फलतः भगवती ने अविलम्ब ही दोनों का शिरश्छेदन कर डाला और उनकी सेना का क्षण भर में ही नाश कर दिया। देवताओं ने पुष्प-वृष्टि की।

काशि-राज सुबाहु तब भगवती की स्तुति करने लगे। देवी ने प्रसन्न हो सुबाहु से वर माँगने को कहा। सुबाहु ने केवल यही वर माँगा कि 'जब तक काशीपुरी रहे, तब तक आप इसकी रक्षा के निमित्त 'दुर्गा' नाम से प्रसिद्ध होकर यहाँ निवास करें।' देवी ने वचन दिया-'जब तक पृथ्वी रहेगी, तब तक मैं काशी-वासिनी होऊँगी।'

तदनन्तर सुदर्शन ने भगवती दुर्गा की स्तुति-प्रार्थना कर विदा माँगी। भगवती ने उसे आशीर्वाद दिया कि 'तुम निष्कण्टक अयोध्यापुरी का राज्य करो, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी। तुम अष्टमी, चतुर्दशी, नवमी को और चैत्र, आश्विन, आषाढ़ और माघ के नवरात्रों में मेरी पूजा किया करना।'

'श्रीदेवी-भागवत', स्कन्ध ५ में भी श्रीदुर्गा की महिमा का वर्णन 'मूल प्रकृति' के रूप में वर्णित है। यथा-

श्री नारद और श्री नारायण संवाद

श्री नारद ने कहा-मैंने सब उपाख्यान तथा तथ्य आपसे सुने। अब वेदों में गुप्त और आदि रहस्य-मय दुर्गा एवं राधा जी के विधान, जो वेदों में कथित हैं, सुनना चाहता हूँ, जिससे सुनकर उनमें चित्त लीन हो जाए। जिनके अंश से यह जगत् चराचर उत्पन्न हुआ और जिनकी भक्ति से मुक्ति होती है, उनके सब विधान सुनना चाहता हूँ।

श्री नारायण ने कहा-नारद जी, सुनिए। वेद-कथित रहस्य कहूँगा, जो सार से भी सार, पर से भी पर है और जो आज तक किसी ने नहीं कहा है। यह अत्यन्त रहस्य-मय है, इसलिए इसे सुनकर दूसरे किसी को (अनधिकारी को) नहीं बताना चाहिए।

मूल प्रकृति-रूपिणी **सवित्**-स्वरूपा **भुवनेश्वरी** से जगत् की उत्पत्ति में उनके प्राणों की अधिष्ठात्री '**राधा**' और बुद्धिष्ठात्री '**दुर्गा जी**' उत्पन्न हुई, जो सब जीवों को प्रेरणा प्रदान करती हैं। उन्हीं के अधीन चराचर जगत् है। जब तक उन दोनों की प्रसन्नता नहीं होती, तब तक मोक्ष दुर्लभ है। अत: उनकी प्रसन्नता-प्राप्ति के लिए—उन दोनों की **नित्य उपासना** करें। महा-पुराण '**श्रीदेवी भागवत**' के इस प्रसङ्ग से स्पष्ट है कि **मूल प्रकृति** के दो रूप हुए—एक **दुर्गा**, दूसरा **राधा**।

मूल प्रकृति के इस प्रसङ्ग में आगे वर्णित **श्रीदुर्गा-माहात्म्य** से विषय और भी स्पष्ट हो जाता है।

श्री नारायण ने कहा—विप्रेन्द्र! **दुर्गा देवी** के मन्त्र का विधान सुनें, जिसके श्रवण मात्र से ही महा-आपदाएँ दूर हो जाती हैं। जो इस **दुर्गा भगवती** को नहीं भजता, उसके समान अभागा कोई कहीं नहीं। **श्री 'दुर्गा' सबकी उपासना के योग्य, सबकी माता, शिव की शक्ति, महा-अद्‌भुत, बुद्धि की अधिष्ठात्री** और **अन्तर्यामिनी** हैं। **दुर्गम सङ्कट का नाश** करती हैं, इसी से इनका नाम '**दुर्गा**' है।

भगवती दुर्गा, वैष्णव और **शैव** आदि सभी के द्वारा **नित्य उपासना** करने योग्य हैं। ये **मूल प्रकृति-रूपा** हैं। **सृष्टि, स्थिति** और **संहार** करनेवाली इनका **नवाक्षर मन्त्र**, मन्त्रों में उत्तम '**नवार्ण-मन्त्र**' कहलाता है।

उपर्युक्त प्रसङ्ग में यद्यपि **मूल प्रकृति** से **श्रीदुर्गा** और **श्रीराधा** का प्रादुर्भाव कहा गया है, तथापि वहीं विधान में कहा गया है कि **श्रीदुर्गा** '**सर्व-बुद्ध्यधि-देवी—सबकी बुद्धि की अधि-देवी**', '**अन्तर्यामि - स्वरूपिणी**' और '**मूल - प्रकृति - रूपा — सा सृष्टि-स्थित्यन्त-कारिणी**'—**मूल प्रकृति**-रूपा, **सृष्टि** करनेवाली, **स्थिति** और **अन्त** करनेवाली शक्ति हैं।

'**दुर्ग-सङ्कट-हंत्रीति, दुर्गेति प्रथिता भुवि**' अर्थात् **दुर्गा**-विशाल सङ्कट को नाश करनेवाली हैं, अत: '**दुर्गा**' नाम से ख्यात हैं।

'**देवी-भागवत**' में ही **श्रीदुर्गा** के लिए एक प्रसङ्ग और आया है। देखिए, स्कन्ध ९, अध्याय २। यथा—

'...'**प्रकृति**' नित्य है, जो '**ब्रह्म**' की लीला और सनातनी है। जैसे **अग्नि** में जलानेवाली शक्ति, **चन्द्रमा** और **कमल** में शोभा-रूपा शक्ति, **सूर्य** में प्रभा निरन्तर युक्त रहती है—कभी भिन्न नहीं होती, वैसे ही '**ब्रह्म**' में '**प्रकृति**' सदा लीन रहती है। जैसे **सुनार** बिना सुवर्ण कुण्डलादि नहीं बना सकता, **कुम्हार** बिना मिट्टी घटादि नहीं बना सकता, वैसे ही **प्रकृति** बिना **आत्मा** सृष्टि करने में समर्थ नहीं है। '**प्रकृति**'—**सर्व-शक्ति-स्वरूप** है और उसी से **आत्मा शक्ति-मान्** कहलाता है।

'श'-शब्द **ऐश्वर्य** - वाचक और 'क्ति' - शब्द **पराक्रम** - वाची है। **ज्ञान-समृद्धि-सम्पत्ति-यश-बल** आदि को '**भग**' कहते हैं। जिसमें '**शक्ति**' व '**भग**' हो, उसको '**भगवती**' कहते हैं। '**भगवती**' ही '**शक्ति**' कहलाती हैं और '**शक्ति**' से युक्त आत्मा **भगवान्** कहलाता है।

'**श्रीदेवी-भागवत**' के उपर्युक्त विवरण से यह प्रमाणित होता है कि **श्रीदुर्गा विष्णु-माया** एवं **सनातनी** हैं। सम्पूर्ण देव-देवियाँ **इन्हीं से प्रगट** हैं। **श्रीदुर्गा बीज-रूपा मूल-प्रकृति ईश्वरी** हैं।

अब **श्रीदुर्गा** के विषय में **श्रीदुर्गा सप्तशती** के आधार पर विवेचन करें। **श्रीदुर्गा सप्तशती**, एकादश अध्याय में **भगवती** द्वारा **धूम्र-लोचन, चण्ड-मुण्ड, रक्त-बीज, निशुम्भ-शुम्भ** आदि के मारने के बाद निष्कण्टक होने पर देवताओं ने उनकी स्तुति की।

स्तुति में **देवताओं** ने **देवी** से कहा—'**हे देवि!** प्रसन्न होओ! जिस प्रकार इस समय असुरों का वध करके तुमने शीघ्र ही हम लोगों की रक्षा की है, उसी प्रकार हमें असुरों के भय से बचाओ।

देवी ने तब **देवताओं** से कहा—**देवताओं!** मैं वर देने को तैयार हूँ। तुम्हारे मन में जिस बात की कामना हो, वर माँगो। संसार के लिए उप-कारक वह वर मैं अवश्य दूँगी।

देवताओं ने वर माँगा—**हे सर्वेश्वरि!** तुम इसी प्रकार तीनों लोकों की समस्त बाधाओं को शान्त करो और हमारे **शत्रुओं का नाश** करती रहो।

उत्तर में **देवी** ने (उस काल के) भविष्य के अनेक उपद्रवों तथा बाधाओं का उल्लेख कर बाधाओं के शमनार्थ विविध नामों से युक्त अपने प्रादुर्भाव का वर्णन किया।

श्रीदुर्गा सप्तशती, एकादश अध्याय के उपर्युक्त वर्णन में **देवताओं** से किस **देवी** ने कहा, उनका नाम नहीं है तथापि यह **तृतीय चरित महा-सरस्वती-चरित** का प्रसङ्ग है। दैत्यादियों के नाश के बाद **श्रीदुर्गा त्रि-गुणात्मिका शक्ति** में मिल गई, तब वही **त्रि-गुणात्मिका शक्ति** देवताओं से बोली हैं। इससे इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है कि **सात्त्विकी शक्ति महा-सरस्वती** अपनी '**त्रि-गुणात्मिका महा-शक्ति**' में विलीन होकर **देवताओं की प्रार्थना** सुनकर वरदान देती हैं। यहाँ **भगवती** ने अपने अन्य प्रादुर्भाव जैसे **रक्त-दन्तिका, शाकम्भरी, दुर्गा, भीमा देवी, भ्रामरी** के नाम भी बताए हैं। गवेषणा से भक्त-गण यह पता लगा सकते हैं कि **त्रि-गुणात्मिका भगवती** के किस गुण से कौन रूप प्रकट हुआ।

श्रीदुर्गा सप्तशती में तीन चरितों—१. **महा-काली**, २. **महा-लक्ष्मी** और ३. **महा-सरस्वती** का वर्णन है। समग्र चरित को '**श्रीदुर्गा सप्तशती**' कहा गया है क्योंकि ये सभी '**श्रीदुर्गा**' के ही रूप हैं।

श्रीदुर्गा सप्तशती के २ से ४ अध्याय तक **महा-लक्ष्मी चरित** है। इस चरित में **महिषासुर** के **देवी** द्वारा मारे जाने पर **देवताओं** ने **भगवती** की '**दुर्गा**'-नाम से प्रार्थना की है। देखिए, प्रार्थना का ११वाँ और १७वाँ मन्त्र—

मेधाऽसि देवि! विदिताऽखिल-शास्त्र-सारा,
दुर्गाऽसि दुर्ग-भव-सागर-नौर-सङ्गा।
श्रीः कैटभारि - हृदयैक - कृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशि-मौलि-कृत-प्रतिष्ठा।।११।।

अर्थात् **हे देवि!** जिससे सब शास्त्रों के सार का ज्ञान होता है, वह '**मेधा-शक्ति**' आप ही हैं। दुर्गम भव-सागर से पार उतारनेवाली नौका-रूप आप ही हैं। आपकी कहीं भी आसक्ति नहीं है। **कैटभ** के शत्रु **भगवान् विष्णु** के वक्षः-स्थल में निवास करनेवाली **भगवती लक्ष्मी** तथा **चन्द्र-शेखर** द्वारा सम्मानित **गौरी** भी आप ही हैं।

दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि! का त्वदन्या?
सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता।।१७।।

अर्थात् हे, **दुर्गे!** स्मरण करने पर प्राणियों का **अशेष भय** हर लेती हो। स्वस्थ पुरुषों द्वारा स्मरण करने पर उन्हें **परम कल्याण-मयी बुद्धि** देती हो। **दारिद्र्य-दुःख** और **भय** हरण करनेवाली आपके अतिरिक्त दूसरी कौन शक्ति है? आपका चित्त सबका उपकार करने के लिए सदा दयार्द्र रहता है।

इसी प्रकार **श्रीदुर्गा सप्तशती** के अध्याय ५ से ११ तक **महा-सरस्वती चरित** है। इसमें भी **निशुम्भ, शुम्भ** आदि दैत्यों से त्राण पाने के लिए **देवताओं** ने **भगवती** की प्रार्थना में '**दुर्गा**' नाम से प्रार्थना की है। देखिए, अध्याय ५, मन्त्र १२वाँ और २४वाँ—

दुर्गायै दुर्ग-पारायै, सारायै सर्व-कारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै, धूमायै सततं नमः।।१२।।

अर्थात् दुर्गा, दुर्गम सङ्कट से पार उतारनेवाली, सबकी आधार-भूता, सर्व-कारिणी, ख्याति, कृष्णा और धूमा देवी को सदा प्रणाम है।

सर्व-स्वरूपे! सर्वेशे!, सर्व-शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि!, दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते ।।२४।।

अर्थात् हे **सर्व-स्वरूपे, सर्वेश्वरि** तथा **सर्व-प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्य-रूपे दुर्गे देवि!** सब भयों से हमारी रक्षा करो! तुम्हें प्रणाम है।

'सप्तशती' के **प्रथम चरित महा-काली-चरित** में **'दुर्गा'** का नाम नहीं आया है तथापि **महा-काली** या **काली** के लिए भी **'दुर्गा'** का नाम आया है। **मधु-कैटभ** के मारनेवाले, योग-निद्रा-आश्रित **भगवान् विष्णु** के हृदय में निवास करनेवाली **महा-माया-महा-काली** भी **'दुर्गा'** ही हैं।

'अर्गला स्तोत्र' में भी **'काली'** के लिए **'दुर्गा'** नाम आया है। यथा—

जयन्ती मङ्गला काली, भद्र-काली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री, स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

अर्थात् **जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्र-काली** (जो अपने भक्तों के लिए भद्र अथवा मङ्गल देनेवाली हो), **कपालिनी, दुर्गा, क्षमा, शिवा, धात्री, स्वाहा** और **स्वधा** नामों से प्रसिद्ध **जगदम्बिके!** तुम्हें प्रणाम है। एक ही शक्ति के लिए **'दुर्गा'** और **'काली'**-नाम आया है।

संक्षेप में, **श्रीदुर्गा** के अनेक नाम हैं तथा अनेक रूप हैं, जिन्हें समय-समय पर उन्होंने धारण किया है। उपासक **द्वि-भुजी, अष्ट-भुजी, दश-भुजी, अष्टादश-भुजी** एवं **सहस्र-भुजी** आदि-रूप में इनकी उपासना करते हैं। इनकी उपासना, ध्यान-पूजा-अर्चनादि विभिन्न **तन्त्र-शास्त्रादि** के आधार पर भिन्न-भिन्न क्रियाओं द्वारा की जाती है। **स्तोत्रादि से भी आराधना** होती है।

प्रस्तुत पुस्तक **श्रीदुर्गा** के विविध स्तोत्रों एवं साधनाओं का सङ्कलन है। हमें विश्वास है कि **'मातृ'-भक्त** इस सङ्कलन से लाभ उठाएँगे और **'प्रकृति'-रूपा श्रीदुर्गा जी की आराधना** कर लाभ उठाएँगे।

पुरुषोत्तमी प्रतिपदा, २०५० वि०
१८ अगस्त, १९९३

-'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग

***

श्रीदुर्गा-कवचेश्वरम्

पूर्व-पीठिका

।। श्रीभैरव उवाच ।।

अधुना देवि! वक्ष्येऽहं, कवचं मन्त्र-गर्भकम्।
दुर्गायाः सार-सर्वस्वं, कवचेश्वर-संज्ञकम्।।१।।

श्रीभैरव बोले—हे देवि! अब मैं मन्त्रात्मक कवच को कहूँगा, जो दुर्गा का सार-सर्वस्व है और जिसका नाम 'कवचेश्वर' है।

परमार्थ-प्रदं नित्यं, महा-पातक-नाशनम्।
योगि-प्रियं योगि-गम्यं, देवानामपि दुर्लभम्।।२।।

यह कवच नित्य परमार्थ का देनेवाला और महान् पापों का नाश करनेवाला है। योगियों को प्रिय, योगियों द्वारा जानने योग्य और देवताओं को भी दुर्लभ है।

बिना दानेन मन्त्रस्य, सिद्धिर्देवि! कलौ भवेत्।
धारणादस्य देवेशि! शिवस्त्रैलोक्य-नायकः।।३।।

हे देवि! कलि-युग में बिना दान के मन्त्र की सिद्धि होती है। इसके धारण करने से हे देवेशि! शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं।

भैरवी भैरवेशानी, विष्णुर्नारायणो बली।
ब्रह्मा पार्वति! लोकेशो, विघ्न-ध्वंसी गजाननः।।४।।

(इसके धारण करने से) भैरवी—भैरवेशानी हैं, विष्णु—बलवान् नारायण हैं। हे पार्वति! ब्रह्मा—लोकेश हैं और गणेश—विघ्नों को नष्ट करनेवाले हैं।

सेनानीश्च महा-सेनो, जिष्णुर्लेखर्षभः प्रिये!।
सूर्यस्तमोपहो लोके, चन्द्रोऽमृत-निधिस्तथा।।५।।

(इसके धारण करने से) कार्तिकेय—सेना-पति हैं और हे प्रिये! इन्द्र—लेख-ऋषभ, सूर्य—अन्धकार-नाशक तथा चन्द्रमा—अमृत का भण्डार संसार में माना जाता है।

बहुनोक्तेन किं देवि!, दुर्गा-कवच-धारणात्।
मर्त्योऽप्यमरतां याति, साधको मन्त्र-साधकः।।६।।

हे देवि! अधिक कहने से क्या, इस 'दुर्गा-कवच' के धारण करने से मर्त्य भी अमरता को प्राप्त करता है और साधक मन्त्र को सिद्ध करता है।

कवचस्यास्य देवेशि!, ऋषिः प्रोक्तो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुप् प्रिये! दुर्गा, देवताऽष्टाक्षरा स्मृता।।७।।

हे देवेशि! इस 'कवच' के ऋषि महेश्वर कहे गए हैं। हे प्रिये! (इसका) छन्द अनुष्टुप् और अष्टाक्षरी दुर्गा इसकी देवता हैं।

चक्रि-वीजं च वीजं स्यान्, माया शक्तिरितीरिता।।८।।

चक्र-वीज (दुं) इसका वीज है और माया (ह्रीं) इसकी शक्ति है।

'श्रीदुर्गा-कवचेश्वर' का मूल-पाठ

विनियोग : ॐ अस्य श्रीदुर्गा-कवचेश्वरस्य श्रीमहेश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदुर्गा देवता, दुं वीजं, ह्रीं शक्तिः, ॐ कीलकं, श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास : श्रीमहेश्वर-ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे। श्रीदुर्गा-देवतायै नमः हृदि। दुं वीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ कीलकाय नमः नाभौ। श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थं पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ॐ ह्रः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान – दूर्वा-निभां त्रि-नयनां विलसत्-किरीटाम्,
शङ्खाब्ज-खड्ग-शर-खेटक-शूल-चापान्।
सन्तर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थाम्,
दुर्गां नवार-कुल-पीठ-गतां भजेऽहम्।।

मानस-पूजन कर 'श्रीदुर्गा-कवचेश्वर' का पाठ करे–

ॐ मे पातु शिरो दुर्गा, ह्रीं मे पातु ललाटकम्।
दुँ नेत्रेऽष्टाक्षरा पातु, चक्री पातु श्रुती मम।।१।।

'ॐ दुर्गा' मेरे शिर की रक्षा करें, 'ह्रीं' मेरे ललाट की रक्षा करें। अष्टाक्षरा 'दुं' दोनों नेत्रों की और 'चक्री' मेरे कानों की रक्षा करें।

मुखं गण्डौ च मे पातु, देवेशी रक्त-कुण्डला।
वायुर्नासां सदा पातु, रक्त-वीज-निषूदिनी।।२।।

मेरे मुख और दोनों गण्डों की रक्षा 'देवेशी रक्त-कुण्डला' करें। वायु और नासिका की रक्षा सदैव 'रक्त-वीज का संहार करनेवाली' करें।

लवणं पातु मे चोष्ठौ, चामुण्डा चण्ड-घातिनी।
भेकी-वीजं सदा पातु, दन्तान्मे रक्त - दन्तिका।।३।।

चण्ड को मारनेवाली 'चामुण्डा' मेरे दोनों होठों और लवण की रक्षा करें। 'रक्त-दन्तिका' सदैव मेरे दाँतों की रक्षा करें।

ॐ ह्रीं श्रीं पातु मे कण्ठं, नील-कण्ठाङ्क-वासिनी।
ॐ ऐंक्लीं पातु मे स्कन्धौ, स्कन्द-माता महेश्वरी।।४।।

'ॐ ह्रीं श्रीं' नील-कण्ठ शिव की गोद में रहनेवाली मेरे कण्ठ की रक्षा करें। 'ॐ ऐं क्लीं' स्कन्द-माता महेश्वरी मेरे दोनों कन्धों की रक्षा करें।

ॐ सौः क्लीं मे पातु बाहू, देवेशी बगलामुखी।
ऐं श्रीं ह्रीं पातु मे हस्तौ, शिवा-शत-निनादिनी।।५।।

'ॐ सौः क्लीं' देवेशी बगलामुखी मेरी दोनों भुजाओं की रक्षा करें। शत-निनाद करनेवाली 'ऐं श्रीं ह्रीं' शिवा मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें।

सौः ऐं ह्रीं पातु मे वक्षो, देवता विन्ध्य-वासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पातु कुक्षिं, मम मातङ्गिनी परा।।६।।

'सौः ऐं ह्रीं' विन्ध्य-वासिनी देवता मेरे वक्षः-स्थल की रक्षा करें। 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं' परा मातङ्गिनी मेरी कोख की रक्षा करें।

श्रीं ह्रीं ऐं पातु मे पार्श्वौ, हिमाचल-निवासिनी।
ॐ स्त्रीं हूं ऐं पातु पृष्ठं, मम दुर्गति-नाशिनी।।७।।

'श्रीं ह्रीं ऐं' हिमालय में रहनेवाली मेरे दोनों पार्श्वों की रक्षा करें। 'ॐ स्त्रीं हूं ऐं' दुर्गति को नष्ट करनेवाली मेरी पीठ की रक्षा करें।

ॐ क्रीं हूं पातु मे नाभिं, देवी नारायणी सदा।
ॐ ऐंक्लींसौः सदा पातु, कटिं कात्यायनी मम।।८।।

'ॐ क्रीं हूं' देवी नारायणी सदा मेरी नाभि की रक्षा करें। 'ॐ ऐं क्लीं सौः' कात्यायनी सदा मेरी कटि की रक्षा करें।

ॐ ह्रीं श्रीं पातु शिश्नं मे, देवी श्रीबगलामुखी।
ऐं सौः क्लीं सौः पातु गुह्यं, गुह्यकेश्वर-पूजिता।।९।।

'ॐ ह्रीं श्रीं' देवी श्री बगलामुखी मेरे शिश्न की रक्षा करें। 'ऐं सौः क्लीं सौः' गुह्यकेश्वर से पूजिता देवी गुह्य की रक्षा करें।

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ह्सौः पायदूरू मम मनोन्मना।
ॐ जूं सः सौः पातु जानू, जगदीश्वर-पूजिता।।१०।।

'**ॐ ह्रीं ऐं श्रीं ह्सौः**' मनोन्मना मेरे दोनों उरुओं की रक्षा करें और '**ॐ जूं सः सौः**' संसार के ईश्वर से पूजिता मेरे जानुओं की रक्षा करें।

ॐ ऐं क्लीं पातु मे जङ्घे, मेरु-पर्वत-वासिनी।
ॐ ह्रीं श्रीं गीं सदा पातु, गुल्फौ मम गणेश्वरी।।११।।

'**ॐ ऐं क्लीं**' मेरु-पर्वत की रहनेवाली मेरी दोनों जाँघों की रक्षा करें और '**ॐ ह्रीं श्रीं गीं**' गणेश्वरी सदा मेरे दोनों गुल्फों की रक्षा करें।

ॐ ह्रीं दुँ पातु मे पादौ, पार्वती षोडशाक्षरी।
पूर्वे मां पातु ब्रह्माणी, वह्नौ च वैष्णवी तथा।।१२।।

'**ॐ ह्रीं दुं**' षोडशाक्षरी पार्वती मेरे दोनों पैरों की रक्षा करें। '**ब्रह्माणी**' पूर्व दिशा में और '**वैष्णवी**' आग्नेय कोण में मेरी रक्षा करें।

दक्षिणे चण्डिका पातु, नैर्ऋत्ये नारसिंहिका।
पश्चिमे पातु वाराही, वायव्ये अपराजिता।।१३।।

'**चण्डिका**' दक्षिण दिशा में, '**नारसिंहिका**' नैर्ऋत्य कोण में, '**वाराही**' पश्चिम दिशा में और '**अपराजिता**' वायव्य कोण में मेरी रक्षा करें।

उत्तरे पातु कौमारी, चैशान्यां शाम्भवी तथा।
ऊर्ध्वं दुर्गा सदा पातु, पात्वधस्ताच्छिवा सदा।।१४।।

'**कौमारी**' उत्तर दिशा में, '**शाम्भवी**' ईशान कोण में, '**दुर्गा**' ऊर्ध्व दिशा में और '**शिवा**' अधः दिशा में सदैव मेरी रक्षा करें।

प्रभाते त्रिपुरा पातु, निशीथे छिन्न-मस्तका।
निशान्ते भैरवी पातु, सर्वदा भद्र-कालिका।।१५।।

'**त्रिपुरा**' प्रातः-काल में, '**छिन्नमस्ता**' रात्रि-काल में, '**भैरवी**' रात्रि की समाप्ति के समय में और '**भद्र-काली**' सदा मेरी रक्षा करें।

अग्नेरम्बा च मां पातु, जलान्मां जगदम्बिका।
वायोर्मां पातु वाग्-देवी, वनाद् वनज-लोचना।।१६।।

'**अम्बा**' अग्नि से, '**जगदम्बिका**' जल से, '**वाग्-देवी**' वायु से और '**वनज-लोचना**' वन से मेरी रक्षा करें।

सिंहात् सिंहासना पातु, सर्पात् सर्पान्तकासना।
रोगान्मां राज-मातङ्गी, भूताद् भूतेश-वल्लभा।।१७।।

'**सिंहासना**' सिंह से, '**सर्पान्तकासना**' साँप से, '**राज-मातङ्गी**' रोग से और '**भूतेश-वल्लभा**' भूत से मेरी रक्षा करें।

यक्षेभ्यो यक्षिणी पातु, रक्षोभ्यो राक्षसान्तका।
भूत-प्रेत-पिशाचेभ्यः, सुमुखी पातु मां सदा।
सर्वत्र सर्वदा पातु, ॐ ह्रीं दुर्गा नवाक्षरा।।१८।।

'**यक्षिणी**' यक्षों से, '**राक्षसान्तका**' राक्षसों से और '**सुमुखी**' भूत-प्रेत-पिशाचों से मेरी सदा रक्षा करें। '**ॐ ह्रीं**' नवाक्षरा दुर्गा सब जगह सदैव मेरी रक्षा करें।

।।फल-श्रुति।।

इत्येवं कवचं गुह्यं, दुर्गा-सर्वस्वमुत्तमम्।
मन्त्र-गर्भं महेशानि!, कवचेश्वर-संज्ञकम्।
वित्तदं पुण्यदं पुण्यं, वर्म सिद्धि-प्रदं कलौ।।१।।

यह **दुर्गा** के सर्वस्व के समान उत्तम और गुप्त कवच है। **हे महेशानि!** इसमें मन्त्र दिए हुए हैं और इसे '**कवचेश्वर**' कहते हैं। धन-दायक, पुण्य-प्रद, पवित्र और कलि-युग में सिद्धि को देनेवाला यह कवच है।

वर्म सिद्धि - प्रदं गोप्यं, परापर - रहस्यकम्।
श्रेयस्करं मनु - मयं, रोग - नाश - करं परम्।।२।।

यह सिद्धि-दायक कवच परापर रहस्यवाला गुप्त रखने योग्य है। यह अत्यन्त कल्याण-कारी, मन्त्र-मय और रोग का नाशक है।

महा - पातक - कोटिघ्नं, मानदं च यशस्करम्।
अश्व - मेध - सहस्रस्य, फलदं परमार्थदम्।।३।।

करोड़ों महा-पापों को यह नष्ट करनेवाला और सम्मान तथा यश का देनेवाला है। यह **सहस्रों अश्वमेध यज्ञों** के करने का फल देनेवाला और परमार्थ-दायक है।

अत्यन्त-गोप्यं देवेशि!, कवचं मन्त्र-सिद्धिदम्।
पठनात् सिद्धिदं लोके, धारणान्मुक्तिदं शिवे!।।४।।

हे देवेशि! मन्त्र-सिद्धि का देनेवाला यह कवच बहुत गोपनीय है। पाठ करने से संसार में सफलता का दिलानेवाला और **हे शिवे**, धारण करने से मोक्ष-दायक है।

रवौ भूर्जे लिखेद् धीमान्, कृत्वा कर्माह्निकं प्रिये!।
श्रीचक्राग्रेऽष्ट-गन्धेन, साधको मन्त्र-सिद्धये।।५।।

हे प्रिये! बुद्धिमान् साधक मन्त्र-सिद्धि के लिए रविवार के दिन नित्य-कर्म कर चुकने के बाद **श्री-चक्र** के आगे अष्ट-गन्ध से इसे भूर्ज-पत्र पर लिखे।

लिखित्वा धारयेद् बाहौ, गुटिकां पुण्य-वर्धिनीम्।
किं किं न साधयेल्लोके, गुटिका वर्मणोऽचिरात्।।६।।

इसे लिख कर इसकी पुण्य को बढ़ानेवाली गुटिका को भुजा पर धारण करे। इस '**कवच**' की गुटिका संसार में क्या-क्या शीघ्रता से सिद्ध नहीं करती ?

गुटिकां धारयेन्मूर्ध्नि, राजानं वशमानयेत्।
धनार्थी धारयेत् कण्ठे, पुत्रार्थी कुक्षि-मण्डले।।७।।

गुटिका को शिर में धारण कर राजा को वशीभूत करे। धन का इच्छुक इसे गले में और पुत्र की इच्छा रखनेवाला कमर में धारण करे।

तामेवं धारयेन्मूर्ध्नि, लिखित्वा भूर्ज-पत्रके।
श्वेत-सूत्रेण संवेष्ट्य, लाक्षया परि-वेष्टयेत्।।८।।

इसे इस प्रकार शिर पर धारण करे कि भूर्ज-पत्र पर लिख, श्वेत सूत्र से लपेटकर, लाक्षा से परिवेष्ठित करे।

सुवर्णेनाथ संवेष्ट्य, धारयेद् रक्त-रज्जुना।
गुटिका कामदा देवि!, देवानामपि दुर्लभा।।९।।

फिर सुवर्ण से इसे लपेट कर रक्त-वर्ण के डोरे से धारण करे। **हे देवि!** यह गुटिका कामनाओं की पूर्ति करनेवाली और देवताओं को भी दुर्लभ है।

कवचस्यास्य गुटिकां, धृत्वा मुक्ति-प्रदायिनीम्।
कवचस्यास्य देवेशि!, वर्णितुं नैव शक्यते।।१०।।
महिमा वै महा-देवि!, जिह्वा-कोटि-शतैरपि।
अदातव्यमिदं वर्म, मन्त्र-गर्भं रहस्यकम्।।११।।

इस **'कवच'** की मुक्ति-दायिनी गुटिका को धारण करे। हे देवेशि! इस **'कवच'** की महिमा का वर्णन शत-कोटि जिह्वाओं से भी नहीं किया जा सकता। **हे महा-देवि!** यह मन्त्र-युक्त रहस्य-पूर्ण **'कवच'** किसी को नहीं देना चाहिए।

अवक्तव्यं महा-पुण्यं, सर्व-सारस्वत-प्रदम्।
अदीक्षिताय नो दद्यात्, कुचैलाय दुरात्मने।।१२।।

यह अत्यन्त पवित्र, समस्त ज्ञान का देनेवाला और अकथनीय है। अदीक्षित, दुरात्मा और कुमार्गी को इसे नहीं देना चाहिए।

इदं रहस्यं परमं, दुर्गा - कवचमुत्तमम्।
गुह्यं गोप्य-तमं गोप्यं, गोपनीयं स्व-योनि-वत्।।१५।।

यह उत्तम **'दुर्गा-कवच'** बहुत ही रहस्य-मय है और अपनी योनि के समान अत्यन्त गुप्त रखने के योग्य है।

॥ श्री देवी-रहस्ये श्रीदुर्गा-कवचेश्वरम् ॥

***

श्रीब्रह्माण्ड-मोहन दुर्गा-कवचम्

॥पूर्व-पीठिका॥

॥ श्री नारद उवाच ॥

भगवन! सर्व - धर्मज्ञ, सर्व - ज्ञान - विशारद!।
ब्रह्माण्ड - मोहनं नाम, प्रकृतेः कवचं वद॥१॥

नारद ने कहा—हे **भगवन्**! आप सब धर्मों के जाननेवाले हैं और सब प्रकार के ज्ञान में पारङ्गत हैं। प्रकृति के '**ब्रह्माण्ड-मोहन**' नामक कवच को कहिए।

॥ श्रीनारायण उवाच ॥

शृणु वक्ष्यामि हे वत्स!, कवचं च सु - दुर्लभम्।
श्रीकृष्णेनैव कथितं, कृपया ब्रह्मणे पुरा॥२॥

नारायण बोले—हे पुत्र! प्राचीन-काल में **ब्रह्मा** के लिए कृपा-पूर्वक **श्रीकृष्ण** के द्वारा कथित अति ही दुर्लभ कवच को कहूँगा, सुनो।

ब्रह्मणा कथितं पूर्वं, धर्माय जाह्नवी - तटे।
धर्मेण दत्तं मह्यं च, कृपया पुष्करे पुरा॥३॥

ब्रह्मा ने इसे पहले **गङ्गा**-तट पर **धर्मराज** को बताया था। फिर **धर्मराज** ने कृपा करके मुझे **पुष्कर** में इसे प्रदान किया था।

त्रिपुरारिश्च यद्-धृत्वा, जघान त्रिपुरं पुरा।
मुमोच ब्रह्मा यद्-धृत्वा, मधु-कैटभयोर्भयात्॥४॥

इसे धारण कर **शङ्कर** ने प्राचीन-काल में **त्रिपुर राक्षस** को मारा था और **ब्रह्मा** ने **मधु-कैटभ** राक्षसों के भय से छुटकारा पाया था।

सञ्जहार रक्त-वीजं, यद्-धृत्वा भद्र - कालिका।
यद्-धृत्वा हि महेन्द्रश्च, सम्प्राप कमलालयाम्॥५॥

इसे धारण कर **भद्र-कालिका** ने **रक्त-वीज** का संहार किया था और इसी को धारण कर **महेन्द्र** ने **लक्ष्मी** को प्राप्त किया।

यद्-धृत्वा च महा-योद्धा, बाणः शत्रु-भयङ्करः।
यद्-धृत्वा शिव-तुल्यश्च, दुर्वासा ज्ञानिनां वरः॥६॥

इसे धारण कर **वाणासुर** महान् योद्धा और शत्रुओं के लिए भयङ्कर हुआ था। इसी को धारण कर ज्ञानियों में श्रेष्ठ **दुर्वासा** ऋषि शिव के समान हुए थे।

।। मूल-पाठ ।।

ॐ दुर्गेति चतुर्थ्यन्तः, स्वाहान्तो मे शिरोऽवतु।
मन्त्रः षडक्षरोऽयं च, भक्तानां कल्प-पादपः।।१।।

चतुर्थी विभक्ति और **'स्वाहा'** पद से युक्त **'ॐ दुर्गा'** अर्थात् **'ॐ दुर्गायै स्वाहा'** मेरे शिर की रक्षा करें। यह षडक्षर मन्त्र भक्तों के लिए कल्प-वृक्ष के समान है।

विचारो नास्ति वेदे च, ग्रहणेऽस्य मनोर्मुने!।
मन्त्र-ग्रहण-मात्रेण, विष्णु-तुल्यो भवेन्नरः।।२।।

हे **मुने!** इस मन्त्र के ग्रहण करने में विचार करने की आवश्यकता नहीं है। ग्रहण करने से ही मनुष्य **विष्णु** के समान हो जाता है।

मम वक्त्रं सदा पातु, ॐ दुर्गायै नमोऽन्तकः।
ॐ दुर्गे च इति कण्ठं, मन्त्रः पातु सदा मम।।३।।

'नमः' अन्तवाला **'ॐ दुर्गायै'** मन्त्र मेरे मुख की सदा रक्षा करे। **'ॐ दुर्गे'** यह मन्त्र सदा मेरे कण्ठ की रक्षा करे।

ॐ ह्रीं श्रीमिति मन्त्रोऽयं, स्कन्धं पातु निरन्तरम्।
ह्रीं श्रीं क्लीमिति पृष्ठं च, पातु मे सर्वतः सदा।।४।।

'ॐ ह्रीं श्रीं' यह मन्त्र मेरे कन्धे की बराबर रक्षा करे। **'ह्रीं श्रीं क्लीं'** यह मन्त्र मेरी पीठ की सदा रक्षा करे।

ह्रीं मे वक्ष-स्थलं पातु, हं सं श्रीमिति सन्ततम्।
ऐं श्रीं ह्रीं पातु सर्वाङ्गं, स्वप्ने जागरणे सदा।।५।।

'ह्रीं हं सं श्रीं' मेरे वक्षः-स्थल की सर्वदा रक्षा करे। **'ऐं श्रीं ह्रीं'** स्वप्न में और जाग्रत् अवस्था में सदा सभी अङ्गों की रक्षा करे।

प्राच्यां मां पातु प्रकृतिः, पातु वह्नौ च चण्डिका।
दक्षिणे भद्र-काली च, नैर्ऋत्यां च महेश्वरी।।६।।

पूर्व दिशा में **'प्रकृति'**, अग्नि-कोण में **'चण्डिका'**, दक्षिण में **'भद्र-काली'** और नैऋत्य कोण में **'महेश्वरी'** मेरी रक्षा करें।

वारुण्यां पातु वाराही, वायव्यां सर्व-मङ्गला।
उत्तरे वैष्णवी पातु, तथैशान्यां शिव-प्रिया।
जले स्थले चान्तरिक्षे, पातु मां जगदम्बिका।।७।।

पश्चिम दिशा में **'वाराही'**, वायव्य कोण में **'सर्व-मङ्गला'**, उत्तर दिशा में **'वैष्णवी'** और ईशान कोण में **'शिव-प्रिया'** मेरी रक्षा करें। जल, स्थल और अन्तरिक्ष में **'जगदम्बिका'** मेरी रक्षा करें।

।।फल-श्रुति।।

इति ते कथितं वत्स!, कवचं च सु-दुर्लभम्।
यस्मै कस्मै न दातव्यं, प्रवक्तव्यं न कस्यचित्।
गुरुमभ्यर्च्य विधि-वद्, वस्त्रालङ्कार-चन्दनैः।।१।।

हे पुत्र, यह बड़ा दुर्लभ कवच तुमसे कहा है। जिस किसी को इसे न देना चाहिए और न किसी को बताना चाहिए। विधि-पूर्वक वस्त्राभूषण तथा चन्दन से गुरु की पूजा कर–

कवचं धारयेद् यस्तु, सोऽपि विष्णुर्न संशयः।
स्नाने च सर्व-तीर्थानां, पृथिव्याश्च प्रदक्षिणे।।२।।

जो इस कवच को धारण करता है, वह विष्णु के समान होता है, इसमें सन्देह नहीं। सब तीर्थों में स्नान करने और पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने में–

यत्-फलं लभते लोकस्तदेतद् धारणे मुने!।
पञ्च-लक्ष-जपेनैव, सिद्धमेतद् भवेद् ध्रुवम्।।३।।

जो फल लोग पाते हैं, हे मुने! वह फल इसके धारण करने से होता है। पाँच लाख जप से ही यह निश्चय सिद्ध होता है।

लोकश्च सिद्ध-कवचो, नावसीदति सङ्कटे।
न तस्य मृत्युर्भवति, जले वह्नौ विषे ज्वरे।।४।।

इस कवच को सिद्ध करनेवाला सङ्कट में कभी दुःखी नहीं होता। जल, अग्नि, विष, ज्वर में उसकी मृत्यु नहीं होती।

जीवन्मुक्तो भवेत् सोऽपि, सर्व-सिद्धीश्वरीश्वरम्।
यदि स्यात् सिद्ध-कवचो, विष्णु-तुल्यो भवेद् ध्रुवम्।।५।।

यदि इस कवच को सिद्ध कर ले, तो साधक सब सिद्धियों की स्वामिनी का ईश्वर होकर जीवन्मुक्त होता है और निश्चय ही विष्णु के समान होता है।

।। श्रीब्रह्माण्ड-मोहन श्रीदुर्गा-कवचम् ।।

***

श्रीदुर्गा-पञ्जर-स्तोत्रम्

विनियोग–ॐ अस्य श्री दुर्गा-पञ्जर-स्तोत्रस्य श्री सूर्य ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, दिव्य-रूपा श्री दुर्गा देवता, श्री दुर्गा-पञ्जर-स्तोत्रं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–श्री सूर्य-ऋषये नमः शिरसि, त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे, दिव्य-रूपा श्री दुर्गा-देवतायै नमः हृदये, श्री दुर्गा-पञ्जर-स्तोत्रं पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ध्यान–

ॐ हेम-प्रख्यामिन्दु-खण्डात्तमौलिं, शङ्खाभीष्टाभीति हस्तां त्रि-नेत्राम्।
हेमाब्जस्थां पीत-वस्त्रां प्रसन्नां, देवीं दुर्गां दिव्य-रूपां नमामि।।

।।श्री मार्कण्डेय उवाच।।

दुर्गे! दुर्ग प्रदेशेषु, दुर्वार रिपु-मर्दिनी। मर्दयित्री रिपु-श्रीणां, रक्षां कुरु नमोऽस्तु ते।।१।।
पथि देवालये दुर्गे!, अरण्ये पर्वते जले। सर्वत्रोऽपगते दुर्गे!, दुर्गे! रक्ष नमोऽस्तु ते।।२।।
दुःस्वप्ने दर्शने घोरे, घोरे निष्पन्न बन्धने। महोत्पाते च नरके, दुर्गे रक्ष नमोऽस्तु ते।।३।।
व्याघ्रोरग वराहानि, निर्हादि-जन सङ्कटे। ब्रह्म-विष्णु-स्तुते दुर्गे!, दुर्गे! रक्ष नमोऽस्तु ते।।४।।
खेचरा मातरः सर्वं, भूचराश्चा तिरोहिताः। ये त्वां समाश्रिताः तां त्वं, दुर्गे! रक्ष नमोऽस्तु ते।।५।।
कंसासुर-पुरे घोरे, कृष्ण रक्षण-कारिणी। रक्ष रक्ष सदा दुर्गे!, दुर्गे! रक्ष नमोऽस्तु ते।।६।।
अनिरुद्धस्य रुद्धस्य, दुर्गे बाण-पुरे पुरा। वरदे त्वं महा-घोरे, दुर्गे! दुर्गे! रक्ष नमोऽस्तु ते।।७।।
देव-द्वारे नदी-तीरे, राज-द्वारे च सङ्कटे। पर्वतारोहणे दुर्गे!, दुर्गे! रक्ष नमोऽस्तु ते।।८।।

।।फल-श्रुति।।

दुर्गा-पञ्जरमेतत्तु, दुर्गा-सार समाहितम्। पठनस्तारयेद् दुर्गा, नात्र कार्या विचारण।।१।।
रुद्र-बाला महा-देवी, क्षमा च परमेश्वरी। अनन्ता विजया नित्या, मातस्त्वमपराजिता।।२।।

।।श्री मार्कण्डेय-पुराणे देवी-माहात्म्ये रुद्र-यामले दिव्य-रूपा श्री दुर्गा-पञ्जर-स्तोत्रम्।।

***

श्रीदुर्गा-कवचम्

॥ पूर्व-पीठिका ॥

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, कवचं सर्व-सिद्धिदम्।
पठित्वा धारयित्वा च, नरो मुच्यते सङ्कटात्॥१॥

हे देवि! सब सिद्धियों के देनेवाले '**कवच**' को कहूँगा, सुनो। इसको पढ़कर एवं धारण कर मनुष्य सङ्कट से छूट जाता है।

अज्ञात्वा कवचं देवि!, दुर्गा-मन्त्रं च यो जपेत्।
स नाप्नोति फलं तस्य, परे च नरकं व्रजेत्॥२॥

हे देवि! इस '**कवच**' को जाने बिना जो दुर्गा के मन्त्र का जप करता है, वह उस जप का फल नहीं पाता और अन्त में नरक में वास करता है।

इदं गुह्य - तमं देवि!, कवचं तव कथ्यते।
गोपनीयं प्रयत्नेन, सावधानावधारय॥३॥

हे देवि! यह अत्यन्त गुप्त '**कवच**' तुमसे कहता हूँ। इसे यत्न-पूर्वक गुप्त रखना चाहिए। ध्यान देकर सुनो।

॥ मूल-पाठ ॥

उमा देवी शिरः पातु, ललाटं शूल-धारिणी।
चक्षुषी खेचरी पातु, कर्णौ चत्वर-वासिनी॥१॥

'**उमा**' देवी शिर की, '**शूल-धारिणी**' ललाट की रक्षा करें। '**खेचरी**' दोनों आँखों की, '**चत्वर-वासिनी**' दोनों कानों की रक्षा करें।

सुगन्धा नासिकां पातु, वदनं सर्व-साधिनी।
जिह्वां च चण्डिका पातु, ग्रीवां सौभद्रिका तथा॥२॥

'**सुगन्धा**' नासिका की, '**सर्व-साधिनी**' मुख की रक्षा करें। '**चण्डिका**' जिह्वा की और '**सौभद्रिका**' ग्रीवा की रक्षा करें।

अशोक-वासिनी चेतो, द्वौ बाहू वज्र-धारिणी।
कण्ठं पातु महा-वाणी, जगन्माता स्तन-द्वयम्॥३॥

'**अशोक-वासिनी**' बुद्धि की, '**वज्र-धारिणी**' दोनों भुजाओं की रक्षा करें। '**महा-वाणी**' कण्ठ की, '**जगन्माता**' दोनों स्तनों की रक्षा करें।

हृदयं ललिता देवी, उदरं सिंह-वाहिनी।
कटिं भगवती देवी, द्वावूरू विन्ध्य-वासिनी॥४॥

'ललिता' देवी हृदय की, 'सिंह-वाहिनी' उदर की रक्षा करें। 'भगवती' देवी कमर की, 'विन्ध्य-वासिनी' दोनों उरुओं की रक्षा करें।

महा-बला च जङ्घे द्वे,पादौ भू-तल-वासिनी।
एवं स्थिताऽसि देवि! त्वं, त्रैलोक्य-रक्षणात्मिके।
रक्ष मां सर्व-गात्रेषु, दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते।।५।।

'महा-बला' दोनों जाँघों की और 'भू-तल-वासिनी' दोनों पैरों की रक्षा करें। तीनों लोकों की रक्षिका के स्वरूपवाली हे देवि! इस प्रकार तुम स्थित हो। हे दुर्गे! सब अङ्गों में मेरी रक्षा करो। हे देवि! तुम्हें नमस्कार है।

॥ फल-श्रुति ॥

इत्येतत् कवचं देवि!, महा-विद्या-फल-प्रदम्।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, सर्व-तीर्थ-फलं लभेत्।।१।।

हे देवि! परम ज्ञान के फल को देनेवाला यह 'कवच' है। जो प्रातः-काल उठकर इसे पढ़ता है, वह सब तीर्थों का फल प्राप्त करता है।

यो न्यसेत् कवचं देहे, तस्य विघ्नं न कुत्र-चित्।
भूत-प्रेत-पिशाचेभ्यो, भयस्तस्य न विद्यते।।२।।

जो इस 'कवच' का अपने शरीर में न्यास करता है, उसे कहीं विघ्न नहीं होता। भूत-प्रेत-पिशाचों से उसे भय नहीं रहता है।

रणे राज-कुले वापि, सर्वत्र विजयी भवेत्।
सर्वत्र पूजामाप्नोति, देवी-पुत्र इव क्षितौ।।३।।

युद्ध या राज-दरबार में—सब स्थानों में विजयी होता है। सभी जगह पूजा पाकर वह देवी-पुत्र के समान पृथ्वी पर निवास करता है।

।। कुब्जिका-तन्त्रे श्रीदुर्गा-कवचम् ।।

***

श्रीब्रह्माण्ड-विजय दुर्गा-कवचम्

॥ पूर्व-पीठिका ॥

।।श्री नारद उवाच।।

कवचं कथितं ब्रह्मन्!, पद्मायाश्च मनोहरम्।
परं दुर्गति-नाशिन्याः, कवचं कथय प्रभो!।।१।।

श्री नारद ने कहा—हे ब्रह्मन्! लक्ष्मी का मनोहर कवच आपने कहा। हे **प्रभो!** अब दुर्दशा को नष्ट करनेवाली **भगवती दुर्गा** का श्रेष्ठ कवच कहिए।

पद्माक्ष-प्राण तुल्यं च, जीवनाय बल-कारणम्।
कवचानां च यत्-सारं, दुर्ग-नाशन-कारणम्।।२।।

दुर्गासुर के नाश के कारण-रूप जिस **कवच** को **राजा पद्माक्ष** ने अपने जीवन के लिए प्राणों के समान बल-कारक माना है और जो **कवचों** का तत्त्व तथा **दुर्गासुर** के नाश का कारण है।

।।श्री नारायण उवाच।।

शृणु नारद! वक्ष्यामि, दुर्गायाः कवचं शुभम्।
श्रीकृष्णेनैव यद् दत्तं, गो-लोके ब्रह्मणे पुरा।।३।।

श्री नारायण बोले—हे नारद! सुनो, **दुर्गा** के कल्याणकारी **कवच** को कहूँगा, जिसे **श्रीकृष्ण** ने पूर्व-काल में '**गो-लोक**' में **ब्रह्मा** को प्रदान किया था।

ब्रह्मा त्रिपुर-संग्रामे, शङ्कराय ददौ पुरा।
जघान त्रिपुरं रुद्रो, यद् धृत्वा भक्ति-पूर्वकम्।।४।।

ब्रह्मा ने **शङ्कर** को **त्रिपुरासुर** से युद्ध होने पर प्राचीन काल में दिया था और जिसे भक्ति-पूर्वक धारण कर **रुद्र** ने **त्रिपुर राक्षस** को मारा था।

हरो ददौ गौतमाय, पद्माक्षाय च गौतमः।
यतो बभूव पद्माक्षः, सप्त-द्वीपेश्वरो महान्।।५।।

हरि ने **गौतम** को दिया और **गौतम** ने **विष्णु** को, जिससे **राजा पद्माक्ष** पृथिवी के सात द्वीपों के अधीश्वर हुए।

यद् धृत्वा पठनाद् ब्रह्मा, ज्ञान-वान् शक्ति-मान् प्रभुः।
शिवो बभूव सर्वज्ञो, योगिनां च गुरुर्यतः।
शिव-तुल्यो गौतमश्च, बभूव मुनि-सत्तमः।।६।।

जिसे धारण कर पाठ करने से ब्रह्मा ज्ञानी, भगवान् विष्णु शक्ति-शाली और शिव योगियों के गुरु तथा सर्वज्ञ और मुनियों में श्रेष्ठ गौतम शिव के समान तेजस्वी हुए।

ब्रह्माण्ड-विजयस्यास्य, कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिश्छन्दश्च गायत्री, देवी दुर्गति-नाशिनी।।७।।

इस ब्रह्माण्ड-विजय कवच के ऋषि प्रजापति, छन्द गायत्री और देवी दुर्गति-नाशिनी हैं।

ब्रह्माण्ड-विजयेष्वेव, विनियोगः प्रकीर्तितः।
पुण्य - जीवश्च महतां, कवचं परमाद्भुतम्।।८।।

ब्रह्माण्ड की विजयों में इसका **'विनियोग'** कहा गया है। यह बड़ा ही विलक्षण, पुण्य-दायक महान् कवच है।

।। मूल-पाठ ।।

विनियोग : ॐ अस्य श्रीब्रह्माण्ड-विजय-दुर्गा-कवचस्य श्रीप्रजापतिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। दुर्गति-नाशिनी श्रीदुर्गा देवता। ब्रह्माण्ड-विजयार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास : श्रीप्रजापति - ऋषये नमः शिरसि। गायत्री - छन्दसे नमः मुखे। दुर्गति-नाशिनी-श्रीदुर्गा-देवतायै नमः हृदि। ब्रह्माण्ड-विजयार्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ॐ ह्रीं दुर्गति-नाशिन्यै, स्वाहा मे पातु मस्तकम्।
ह्रीं मे पातु कपालं च, ऐं ह्रीं श्रीं पातु लोचने।।१।।

'ॐ ह्रीं दुर्गति-नाशिन्यै स्वाहा' मेरे मस्तक की, **'ह्रीं'** मेरे कपाल की और **'ऐं ह्रीं श्रीं'** मेरी दोनों आँखों की रक्षा करें।

पातु मे कर्ण-युग्मं च, दुं दुर्गायै नमः सदा।
ऐं ह्रीं श्रीं इति नासां मे, सदा मां पातु सर्वतः।।२।।

'दुं दुर्गायै नमः' सदा मेरे दोनों कानों की और **'ऐं ह्रीं श्रीं'** सब ओर से मेरी नासिका की रक्षा करें।

दुर्गे दुर्गे रक्षणीति, स्वाहा चास्य सदाऽवतु।
श्रीं ह्रीं क्लीं पातु दन्तालीं, पातु ह्रीमोष्ठ-युग्मकम्।।३।।

'दुर्गे दुर्गे रक्षणि स्वाहा' मेरे मुख की, **'श्रीं ह्रीं क्लीं'** मेरे दाँतों की पंक्ति की और **'ह्रीं'** मेरे दोनों ओठों की सदा रक्षा करें।

ह्रीं ह्रीं ह्रीं पातु कण्ठं च, दुर्गे रक्षतु गण्डकम्।
स्कन्धं दुर्ग-विनाशिन्यै, स्वाहा पातु निरन्तरम्।।४।।

'**ह्रीं ह्रीं ह्रीं**' मेरे कण्ठ की, '**दुर्गे**' मेरे गण्ड-देश की और '**दुर्ग-विनाशिन्यै स्वाहा**' मेरे कन्धे की सदैव रक्षा करें।

वक्षो विपद्-विनाशिन्यै, स्वाहा मे पातु सर्वतः।
दुर्गे दुर्गे रक्ष पार्श्वौ, स्वाहा नाभिं सदाऽवतु।।५।।

'**विपद्-विनाशिन्यै स्वाहा**' मेरे वक्षः-स्थल की, '**दुर्गे-दुर्गे रक्षणि**' पार्श्वों की और '**स्वाहा**' मेरी नाभि की रक्षा सदा करें।

दुर्गे दुर्गे रक्ष रक्ष, पृष्ठं मे पातु सर्वतः।
ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा च, हस्तौ पादौ सदाऽवतु।।६।।

'**दुर्गे-दुर्गे रक्ष-रक्ष**' चारों ओर से मेरी पीठ की और '**ॐ दुं दुर्गायै स्वाहा**' मेरे दोनों हाथों-पैरों की सदैव रक्षा करें।

श्रीं ह्रीं दुर्गायै स्वाहा च, सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु।
प्राच्यां पातु महा-माया, चाग्नेय्यां पातु कालिका।।७।।

'**श्रीं ह्रीं दुर्गायै स्वाहा**' मेरे सारे अङ्गों की, '**महा-माया**' पूर्व दिशा में और '**कालिका**' आग्नेय कोण में सदा मेरी रक्षा करें।

दक्षिणे दक्ष-कन्या च, नैऋत्यां शिव-सुन्दरी।
पश्चिमे पार्वती पातु, वाराही वारुणे सदा।।८।।

'**दक्ष-कन्या**' दक्षिण दिशा में, '**शिव-सुन्दरी**' नैऋत्य कोण में, '**पार्वती**' पश्चिम दिशा में और '**वाराही**'-वायव्य कोण में सदा मेरी रक्षा करें।

कुबेर-माता कौबेर्यामीशान्यामीश्वरी सदा।
ऊर्ध्वं नारायणी पातु, ह्यम्बिकाऽधः सदाऽवतु।।९।।

'**कबेर-माता**' उत्तर दिशा में, '**ईश्वरी**' ईशान कोण में, '**नारायणी**' ऊर्ध्व-दिशा में और '**अम्बिका**' अधो-दिशा में सदा मेरी रक्षा करें।

ज्ञानं ज्ञान-प्रदा पातु, स्वप्ना स्वप्ने सदाऽवतु।।१०।।

'**ज्ञान-प्रदा**'—मेरे ज्ञान की और '**स्वप्ना**'-स्वप्न में मेरी सदा रक्षा करें।

।।फल-श्रुति।।

इति ते कथितं वत्स!, सर्व-मन्त्रौघ-विग्रहम्।
ब्रह्माण्ड-विजयं नाम, कवचं परमाद्भुतम्।।१।।

हे पुत्र! सब प्रकार के मन्त्रों से युक्त अत्यन्त विलक्षण **'ब्रह्माण्ड-विजय'** नामक कवच को मैंने कहा।

सु-स्नातः सर्व-तीर्थेषु, सर्व-यज्ञेषु यत्-फलम्।
सर्व-व्रतोपवासे च, तत्-फलं लभते नरः।।२।।

सभी यज्ञों के करने का जो फल है और **सब प्रकार के व्रत-उपवास** का जो फल है, वह सब इसके धारण करने से मनुष्य पाता है। वह मानों **सब तीर्थों** में स्नान कर चुका।

गुरुमभ्यर्च्य विधि-वद्, वस्त्रालङ्कार-चन्दनैः।
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ, कवचं धारयेत्तु यः।
स च त्रैलोक्य-विजयी, सर्व-शत्रु-प्रमर्दकः।।३।।

वस्त्र, आभूषण, चन्दनादि सुगन्धित द्रव्यों द्वारा विधि-वत् **गुरुदेव का अर्चन** कर जो इस **कवच** को अपने **कण्ठ** या **दाहिनी** भुजा में धारण करता है, वह समस्त शत्रुओं को पराजित कर तीनों लोकों में विजयी होता है।

इदं कवचमज्ञात्वा, भजेद् दुर्गति-नाशिनीम्।
शत-लक्षं-प्रजप्तोऽपि, न मन्त्रः सिद्धि-दायकः।।४।।

इस **कवच** को न जानकर, जो **दुर्गति-नाशिनी** की उपासना करता है, उसे **सौ लाख जप** कर चुकने पर भी मन्त्र सिद्धि-दायक नहीं होता।

कवचं कण्व-शाखोक्तमुक्तं नारद! सुन्दरम्।
यस्मै कस्मै न दातव्यं, गोपनीयं सु-दुर्लभम्।।५।।

हे नारद! 'कण्व-शाखा' में कहा गया यह सुन्दर कवच है। जिस किसी को इसे न देना चाहिए। इस अत्यन्त दुर्लभ कवच को छिपाकर रखना चाहिए।

।। ब्रह्म-वैवर्ते श्रीब्रह्माण्ड-विजय नाम श्रीदुर्गा-कवचम् ।।

***

श्रीदुर्गा-अष्टोत्तर-शतनाम-स्तोत्रम्

।।पूर्व-पीठिका-श्री ईश्वर उवाच।।

शत-नाम प्रवक्ष्यामि, शृणुष्व कमलानने!।
यस्य प्रसाद-मात्रेण, दुर्गा प्रीता सदा भवेत्।।१।।

।।मूल-पाठ।।

सती[१] साध्वी[२] भव-प्रीता[३], भवानी[४] भव-मोचिनी[५]।
आर्या[६] दुर्गा[७] जया आद्या[८], त्रिनेत्रा[९] शूल-धारिणी[१०]।।१।।
पिनाक-धारिणी[११] चित्रा[१२], चन्द्र-घण्टा[१३] महा-तपा[१४]।
मनो-बुद्धिरहङ्कारा[१५-१८], चित्त-रूपा[१९] चिता[२०] चिति:[२१]।।२।।
सर्व-मन्त्र-मयी[२२] नित्या[२३], सत्यानन्द-स्वरूपिणी[२४]।
अनन्ता[२५] भाविनी[२६] भाव्या[२७], भव्याऽभव्या[२८-२९] सदा-गति:[३०]।।३।।
शाम्भवी[३१] देव-माता[३२] च, चिन्ता[३३] रत्न-प्रिया[३४] सदा।
सर्व-विद्या[३५] दक्ष-कन्या[३६], दक्ष-यज्ञ-विनाशिनी[३७]।।४।।
अपर्णाऽनेक-वर्णा[३८-३९] च, पाटला[४०] पाटलावती[४१]।
पट्टाम्बर-परीधाना[४२], कल-मञ्जीर-रञ्जिनी[४३]।।५।।
अमेय-विक्रमा[४४] क्रूरा[४५], सुन्दरी[४६] सुर-सुन्दरी[४७]।
वन-दुर्गा[४८] च मातङ्गी[४९], मतङ्ग-मुनि-पूजिता[५०]।।६।।
ब्राह्मी[५१] माहेश्वरी[५२] चैन्द्री[५३], कौमारी[५४] वैष्णवी[५५] तथा।
चामुण्डा[५६] चैव वाराही[५७], लक्ष्मीश्च[५८] पुरुषाकृति:[५९]।।७।।
विमलोत्कर्षिणी[६०-६१] ज्ञाना[६२], क्रिया[६३] सत्या[६४] च बुद्धि-प्रदा[६५]।
बहुला[६६] बहुल-प्रेमा[६७], सर्व-वाहन-वाहना[६८]।।८।।
निशुम्भ-शुम्भ-हननी[६९], महिषासुर-मर्दिनी[७०]।
मधु-कैटभ-हन्त्री[७१] च, चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी[७२]।।९।।
सर्वासुर-विनाशा[७३] च, सर्व-दानव-घातिनी[७४]।
सर्व-शास्त्र-मयी[७५] विद्या[७६], सर्वास्त्र-धारिणी[७७] तथा।।१०।।
अनेक-शस्त्र-हस्ता[७८] च, अनेकास्त्र-विधारिणी[७९]।
कुमारी[८०] चैव कन्या[८१] च, कैशोरी[८२] युवती[८३] यती[८४]।।११।।
अप्रौढा[८५] चैव प्रौढा[८६] च, वृद्ध-माता[८७] बल-प्रदा[८८]।
महा-देवी[८९] मुक्त-केशी[९०], घोर-रूपा[९१] महा-बला[९२]।।१२।।

अग्नि-ज्वाला[९३] रौद्र-मुखी[९४], काल-रात्रिस्तपस्विनी[९५-९६]।
नारायणी[९७] भद्र-काली[९८], विष्णु-माया[९९] जलोदरी[१००]।।१३।।
शिव-दूती[१०१] कराली[१०२] च, अनन्ता[१०३] परमेश्वरी[१०४]।
कात्यायनी[१०५] च सावित्री[१०६], प्रत्यक्षा[१०७] ब्रह्म-वादिनी[१०८]।।१४।।

।।फल-श्रुति।।

य इदं च पठेत् स्तोत्रं, दुर्गा-नाम-शताष्टकम्।
नासाध्यं विद्यते देवि!, त्रिषु लोकेषु पार्वति!।।१।।

श्री दुर्गा के एक सौ आठ नामोंवाले इस स्तोत्र का पाठ करने से तीनों लोकों में कुछ भी असाध्य नहीं रहता।

धनं धान्यं सुतान् जायां, हयं हस्तिनमेव च।
चतुर्वर्गं तथा चान्ते, लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम्।।२।।

धन-धान्य, स्त्री-पुत्र, हाथी-घोड़े, चारों वर्ग (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) और अन्त में सनातन मोक्ष को प्राप्त करता है।

कुमारीं पूजयित्वा च, ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् प्रयतो भक्त्या, पठेन्नाम-शताष्टकम्।।३।।

कुमारी-पूजा कर और देवी का ध्यान कर सावधानी-पूर्वक पूजन कर १०८ नामों का भक्ति के साथ पाठ करे।

तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि!, सर्वैः सुर-वरैरपि।
राजानो दासतां यान्ति, राज्य-श्रियमवाप्नुयात्।।४।।

सभी श्रेष्ठ देवों से भी उसे सिद्धि मिलती है। राजा उसके सेवक होते हैं और वह राज्य-लक्ष्मी को प्राप्त करता है।

गोरोचनालक्तक-कुंकुमेन, सिन्दूर-कर्पूर-मधु-त्रयेण।
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो, भवेत् सदा धारयतः स्मरारिः।।५।।

गोरोचन, अलक्तक, कुंकुम, सिन्दूर, कर्पूर और त्रि-मधु से विधि-पूर्वक लिखकर 'यन्त्र' को धारण करनेवाला विधि का जानकार साक्षात् शिव होता है।

भौमावास्यां निशा - भागे, चन्द्रे शतभिषां गते।
विलिख्य प्रपठन् स्तोत्रं, स भवेत् सम्पदां पदम्।।६।।

मङ्गलवार की अमावास्या की रात्रि में, चन्द्रमा के शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश करने पर पाठ करते हुए, स्तोत्र को लिख कर, वह सम्पत्तियों का भाजन बनता है।

।। विश्वसार-तन्त्रे श्रीदुर्गाऽष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम् ।।

***

श्रीदुर्गा-स्तोत्रम्

पूर्व-पीठिका

।।श्री नारद उवाच।।

श्रुतं सर्वं नावशिष्टं, किञ्चिदेव हि निश्चितम्।
प्रकृतेः कवचं स्तोत्रं, ब्रूहि मे मुनि-सत्तम!।।१।।

श्री नारद बोले—हे मुनि-श्रेष्ठ! मैंने सब कुछ सुन लिया, कुछ भी शेष नहीं है। अब प्रकृति का कवच और स्तोत्र मुझे बताने की कृपा कीजिए।।१।।

।।श्री नारायण उवाच।।

पुरा स्तुता सा गो-लोके, कृष्णेन परमात्मना।
सम्पूज्य मधु-मांसेन, प्रीतेन रास-मण्डले।।२।।
मधु-कैटभयोर्युद्धे, द्वितीये विष्णुना पुरा।
तत्रैव काले सा दुर्गा, ब्रह्मणा प्राण-सङ्कटे।।३।।
चतुर्थे संस्तुता देवी, भक्त्या च त्रिपुरारिणा।
पुरा त्रिपुर-युद्धे च, महा-घोर-तरे रणे।।४।।
पञ्चमे संस्तुता देवी, वृत्रासुर-वधे तथा।
शक्रेण सर्वैर्देवैश्च, घोरे च प्राण-सङ्कटे।।५।।
तदा मुनीन्द्रैर्मुनिभिर्मानवैः सुरथादिभिः।
संस्थिता पूजिता सा च, कल्पे कल्पे परात्परा।।६।।
स्तोत्रं च श्रूयतां ब्रह्मन्!, सर्व-विघ्न-विनाशनम्।
सुखदं मोक्षदं सारं, भवाब्धेः पार-कारणम्।।७।।

श्री नारायण बोले—प्राचीन काल में **गो-लोक** में **परमात्मा कृष्ण** ने **रास-मण्डल** में मधु-मांस के द्वारा प्रेम-पूर्वक पूजन कर उन (**दुर्गा**) की स्तुति की थी। दूसरी बार **मधु** और **कैटभ** से युद्ध होने पर **विष्णु** ने और उसी समय **ब्रह्मा** ने प्राण-सङ्कट होने पर उन **दुर्गा** की स्तुति की थी। चौथी बार **त्रिपुरासुर** के शत्रु **शङ्कर** ने **त्रिपुर-युद्ध** में बहुत भीषण संग्राम होने पर भक्ति-पूर्वक **देवी** का स्तवन किया था। पाँचवीं बार **वृत्रासुर** के वध के समय प्राणों पर सङ्कट पड़ने पर **इन्द्र** एवं **सभी देवताओं** के द्वारा **देवी की प्रार्थना** की गई थी। तदनन्तर **ऋषियों, मुनियों** और **सुरथ** आदि मनुष्यों ने प्रति युग में उन **परात्परा दुर्गा** की स्थापना व पूजा की। हे **ब्रह्मन्**! सब विघ्नों के नष्ट करनेवाले स्तोत्र को सुनो, जो सुख देनेवाला, मोक्ष-दायक, संसार-सागर से पार करनेवाला और परम तत्त्व है।।२-७।।

मूल-पाठ

।।श्रीकृष्ण उवाच।।

त्वमेव सर्व-जननी, मूल-प्रकृतिरीश्वरी।
त्वमेवाद्या सृष्टि-विधौ, स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका।।१।।

श्रीकृष्ण प्रार्थना करते हैं—तुम्हीं सबकी माता, मूल प्रकृति, ईश्वरी और आद्या हो। सृष्टि की रचना में तुम अपनी इच्छा से तीन गुणवाली बनती हो।

कार्यार्थे सगुणा त्वं च, वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
पर-ब्रह्म-स्वरूपा त्वं, सत्या नित्या-स्वरूपिणी।।२।।

कार्य के लिए तुम सगुणा हो, अन्यथा वास्तव में निर्गुणा हो। तुम सत्या, नित्या-स्वरूपवाली, पर-ब्रह्म-स्वरूपा हो।

निज-स्वरूपा परमा, भक्तानुग्रह-विग्रहा।
सर्व-स्वरूपा सर्वाणी, सर्वाधारा परात्परा।।३।।

तुम अनुपम स्वरूपवाली, श्रेष्ठा और भक्तों पर कृपा करने हेतु शरीर-धारिणी हो। तुम सर्व-व्यापिका, सबकी आधार-भूता और सर्व-श्रेष्ठा हो।

सर्व बुद्धि-स्वरूपा च, सर्व-शक्ति-स्वरूपिणी।
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा, सर्व-मङ्गल-मङ्गला।।४।।
सर्व-बीज-स्वरूपा च, सर्व-पूज्या निराश्रया।
सर्व-ज्ञान-प्रदा देवी, सर्वज्ञा सर्व-भाविनी।।५।।

तुम सब कुछ जाननेवाली और सब प्रकार से कल्याण-कारिणी हो। तुम सब ज्ञानों की देनेवाली और सब भाव-मयी हो।

त्वं स्वाहा देव-दाने च, पितृ-दाने स्वधा स्वयम्।
दक्षिणा सर्व-दाने च, सर्व-कर्मणि सन्ततम्।।६।।

देव-पूजन में तुम स्वाहा-रूप से हो, पितृ-पूजन में स्वधा तुम्हीं हो। सब प्रकार के दानों में दी जानेवाली दक्षिणा तुम्हारा ही रूप है।

निद्रा त्वं च दया त्वं च, कृष्णा त्वं चात्मनश्च मे।
तत्क्षान्तिः शान्तिरीशा च, कान्तिस्तुष्टिश्च शाश्वति।।७।।

तुम्हीं निद्रा, दया, कृष्णा, क्षान्ति, शान्ति, कान्ति और तुष्टि हो।

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च, लज्जा शोभा प्रभा सदा।
सतां सम्पत् - स्वरूपा श्रीर्विपत्तिरसतामिह।।८।।

श्रद्धा, पुष्टि, तन्द्रा, लज्जा, शोभा, प्रभा, सज्जनों में सम्पत्ति-रूपा श्री और दुष्टों में विपत्ति-रूपा तुम्हीं हो।

प्रीति-रूपा पुण्य-वतां, पापिनां कलहांकुरा।
शश्वत्-कर्म-मयी शक्तिः, सर्वदा सर्व-जीविनाम्।।९।।

पुण्य करनेवालों में प्रेम-भाव के रूप में और पापियों में झगड़े के बीज-रूप में तुम्हीं हो। सभी प्राणियों में निरन्तर कर्म करनेवाली शक्ति-रूपा तुम्हीं हो।

देवेभ्यः स्व-पदं दात्री, धातुर्धात्री कृपा-मयी।
कृता या सर्व-देवानां, सर्वासुर-विनाशिनी।।१०।।

देवताओं को उनका पद देनेवाली, ब्रह्मा की दया-मयी रचयित्री और सभी राक्षसों का नाश करनेवाली तुम्हीं हो।

योग-निद्रा योग-रूपा, योग-दात्री च योगिनाम्।
सिद्धि-स्वरूपा सिद्धानां, सिद्धिदा सिद्ध-योगिनी।।११।।

योगियों की योग-निद्रा और योग-दात्री हो। सिद्धों की सिद्धि-स्वरूपा तुम्हीं हो। सिद्धि देनेवाली सिद्ध योगिनी हो।

माहेश्वरी च ब्रह्माणी, विष्णु-माया च वैष्णवी।
भद्रदा भद्रा-काली च, सर्व-लोक-भयङ्करी।।१२।।

तुम्हीं माहेश्वरी, ब्रह्माणी और वैष्णवी हो। कल्याण-कारी एवं सब लोकों के लिए भयङ्करी तुम्हीं हो।

ग्रामे ग्रामे ग्राम-देवी, गृह-देवी गृहे गृहे।
सतां कीर्तिः प्रतिष्ठा च, निन्दा त्वमसतां सदा।।१३।।

गाँव-गाँव में ग्राम-देवी और घर-घर में गृह-देवी के रूप से तुम्हीं हो। सज्जनों की कीर्ति और प्रतिष्ठा तथा दुर्जनों की निन्दा तुम्हीं हो।

महा-युद्धे महा-मारी, दुष्ट-संहार-रूपिणी।
रक्षा-स्वरूपा शिष्टानां, मातेव हित-कारिणी।।१४।।

महा-युद्ध में दुष्टों का संहार करनेवाली, महा-मारी तुम्हीं हो। सभ्य जनों की माता के समान भलाई करनेवाली रक्षा के रूप में तुम्हीं हो।

वन्द्या पूज्या स्तुता त्वं च, ब्रह्मादीनां च सर्वदा।
ब्राह्मण्य-रूपा विप्राणां, तपस्या च तपस्विनाम्।।१५।।

ब्रह्मा आदि देवों द्वारा तुम सदा वन्दनीया, पूज्या और प्रार्थिता हो। ब्राह्मणों का ब्राह्मणत्व, तपस्वियों की तपस्या, विद्वानों का ज्ञान और साधु बुद्धिमानों की बुद्धि तुम्हीं हो।

विद्या विद्यावतां त्वं च, बुद्धिर्बुद्धि-मतां सताम्।
मेधा स्मृति-स्वरूपा च, प्रतिभा प्रतिभा-वताम्।।१६।।

विद्वानों की तुम विद्या हो और बुद्धिमान् सज्जनों की बुद्धि हो। प्रतिभा-शाली लोगों की बुद्धि, स्मरण-शक्ति और प्रतिभा के रूप में तुम्हीं हो।

राज्ञां प्रताप-रूपा च, विशां वाणिज्य-रूपिणी।
सृष्टौ सृष्टि-स्वरूपा त्वं, रक्षा-रूपा च पालने।।१७।।
तथाऽन्ते त्वं महा-मारी, विश्वे विश्वैश्च पूजिते।
काल-रात्रिर्महा-रात्रिर्मोह-रात्रिश्च मोहिनी।।१८।।

राजाओं का प्रताप और वैश्यों की व्यापार-रूपिणी तुम्हीं हो। सृष्टि-काल में तुम सृष्टि-स्वरूपा हो, पालन करने में रक्षा-रूपा और अन्त-काल में महा-मारी-रूपा हो। विश्व में सभी के द्वारा तुम पूजिता हो। तुम्हीं काल-रात्रि, महा-रात्रि, मोह-रात्रि और मोहिनी हो।

दुरत्यया मे माया त्वं, यया सम्मोहितं जगत्।
यया मुग्धो हि विद्वांश्च, मोक्ष-मार्गं न पश्यति।।१९।।

तुम मेरी अलंघनीया माया हो, जिसके द्वारा सारा जगत् मोह में पड़ा हुआ है और जिससे मुग्ध होकर विद्वान् मोक्ष-मार्ग को नहीं देख पाते।

।।फल-श्रुति।।

इत्यात्मना कृतं स्तोत्रं, दुर्गायाः दुर्ग-नाशनम्।
पूजा-काले पठेद् यो हि, सिद्धिर्भवति वाञ्छिता।।१।।
वन्ध्या च काक-वन्ध्या वा, मृत-वत्सा च दुर्भगा।
श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं, सु-पुत्रं लभते ध्रुवम्।।२।।
कारागारे महा-घोरे, यो बद्धो दृढ-बन्धने।
श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं, बन्धनान्मुच्यते ध्रुवम्।।३।।
यक्ष्म-ग्रस्तो गलत्-कुष्ठी, महा-शूली महा-ज्वरी।
श्रुत्वा स्तोत्रं वर्षमेकं, सद्यो रोगात् प्रमुच्यते।।४।।
पुत्र-भेदे प्रजा-भेदे, पत्नी-भेदे च दुर्गतः।
श्रुत्वा स्तोत्रं मासमेकं, लभते नात्र संशयः।।५।।

यह अपना रचित दुर्गा का स्तोत्र स्वर्ग का देनेवाला है। जो पूजा के समय इसे पढ़ता है, उसकी कामना पूरी होती है। वन्ध्या, काक-वन्ध्या या मृत-वत्सा स्त्री एक वर्ष तक यदि इसे सुने, तो निश्चय ही सुन्दर पुत्र प्राप्त करती है। जो अत्यन्त कठिन कारावास या बन्धन में पड़ा हो, वह यदि इस स्तोत्र को एक मास तक सुने, तो निश्चय ही बन्धन से छूट जाता है। यक्ष्मा, गलित कुष्ठ, भयानक पीड़ा, कठिन ज्वर से पीड़ित व्यक्ति यदि इस स्तोत्र को एक वर्ष तक सुने, तो शीघ्र ही रोग से छूट जाता है। पुत्र से पीड़ित, प्रजा से पीड़ित और पत्नी से पीड़ित जो दुर्दशा-ग्रस्त होता है, वह यदि एक वर्ष तक इस स्तोत्र को सुनता है, वह लाभ पाता है—इसमें सन्देह नहीं।।१-५।।

।। श्री ब्रह्म-वैवर्ते श्रीदुर्गा-स्तोत्रम्।।

श्रद्धा-सुमन

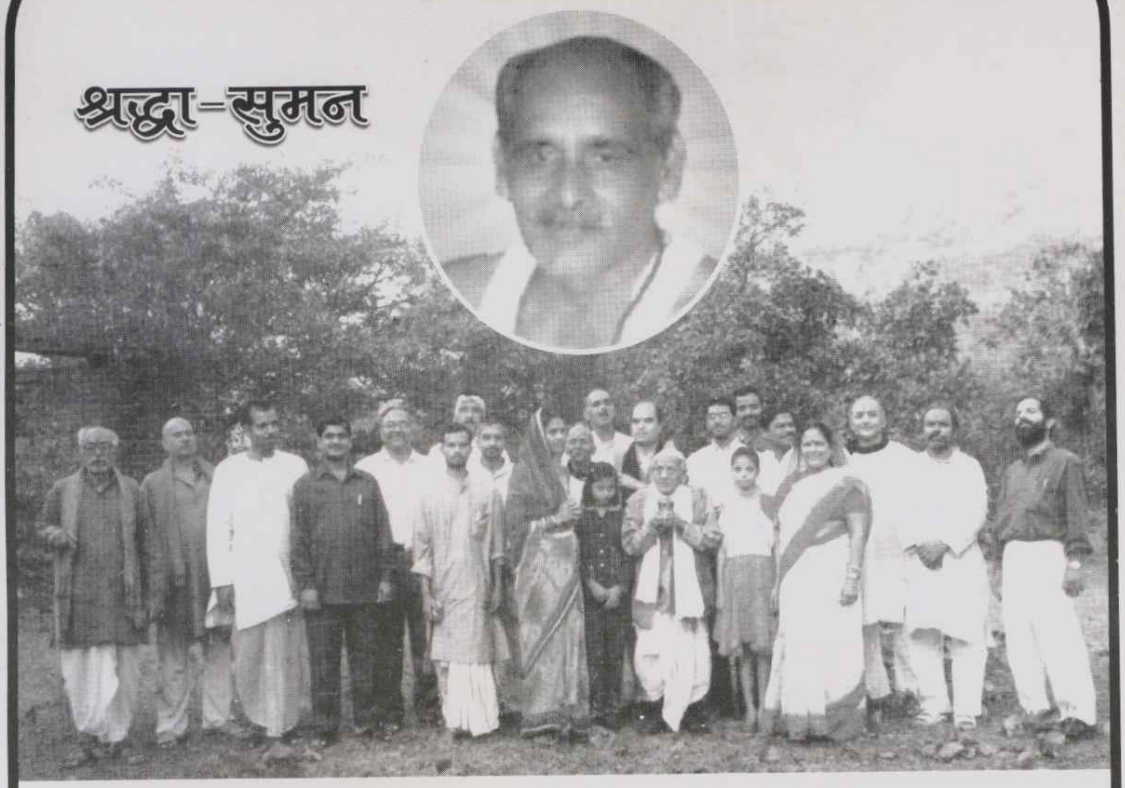

श्री वैद्यनाथ-धाम के त्रिकूटा पर्वताञ्चल में
गुरुदेव पं० रमादत्त शुक्ल जी एवं गुरु-परिवार के साथ
गुरु-भाई पं० सतीशकुमार जी उपाध्याय
(सबसे पीछे की लाईन में बीच में)

'चण्डी' पुस्तक-माला के पाठकों को यह जानकर हार्दिक कष्ट होगा कि
महा-माया की कठिन परीक्षा-स्वरूप
गुरु-भाई पं० सतीशकुमार उपाध्याय स-शरीर अब हमारे बीच नहीं हैं।
२४ जनवरी, २०११ को आपका मणिपुर-वास हो गया।
'गुरु-मण्डल' से प्रार्थना है कि
'सम्पूर्ण गुरु-परिवार को कष्ट सहने की शक्ति प्रदान करें।'
'हमें परम स्नेही गुरु-भाई पं० सतीशकुमार उपाध्याय के हार्दिक इच्छानुसार
उनके आत्मीय कार्यों को,
उनकी सजीव स्मृति-सहित पूरा करने की शक्ति प्रदान करें।'

-ऋतशील शर्मा

रजि० सं० ३२९८१/५७

'श्रीदुर्गा-सप्तशती'-विषयक महत्त्व-पूर्ण पुस्तक

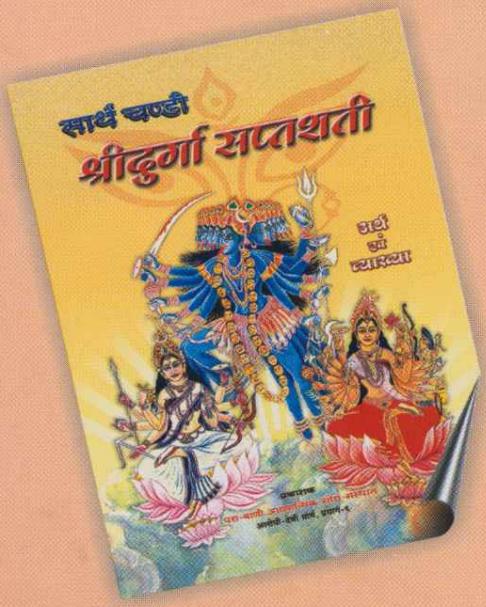

'सप्तशती' का 'पाठ' करना हम सभी के लिए कितना श्रेयस्कर है, यह हम सबको भलीभाँति ज्ञात है। इसके 'पाठ'-मात्र से लोगों की सभी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं। कठिनाई केवल यह है कि 'सप्तशती' नामक स्तव प्रसिद्ध 'मार्कण्डेय-पुराण' का अंश है, जो हजारों वर्ष प्राचीन है। इसके विभिन्न शब्दों एवं विशिष्ट सन्दर्भों का ठीक-ठीक अर्थ हमें ज्ञात नहीं होता और हम इसका भाव-पूर्ण 'पाठ' नहीं कर पाते, जिसका परिणाम यह होता है कि हमें जितनी सफलता मिलनी चाहिए, वह नहीं मिल पाती।

प्रस्तुत सार्थ चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती) द्वारा उक्त कठिनाई दूर हो जाती है, क्योंकि इसमें अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण 'सप्तशती'-स्तव के विभिन्न शब्दों एवं विशिष्ट सन्दर्भों पर सरल हिन्दी भाषा में प्रामाणिक रूप से प्रकाश डाला गया है। इसके अध्ययन द्वारा हम लोग प्रसिद्ध 'सप्तशती'-स्तव का भाव-पूर्ण 'पाठ' कर सकते हैं, इसमें सन्देह नहीं। सार्थ चण्डी (श्रीदुर्गा सप्तशती) की यही सबसे बड़ी विशेषता है।

श्री जगदम्बा के अनुग्रह से
पूज्य पं० देवीदत्त जी शुक्ल की स्मृति में
उक्त महत्त्व-पूर्ण पुस्तक
'कुल-भूषण पं० रमादत्त जी शुक्ल के
विशिष्ट सम्पादन में प्रकाशित हुई है।
सभी 'श्रीदुर्गा-सप्तशती'-प्रेमी बन्धुओं के
लिए यह पुस्तक संग्रहणीय है।
मूल्य २५०.०० रु०

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ०९४५०२२२७६७